NJESR/December2024/Volume-6/ Issue-12 E- ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/ NJESR.2024.6.12.1-10

पिकासो और गगनेन्द्र नाथ टैगोर का घनवाद

कुलविन्दर कौर
शोध छात्रा (चित्रकला)
शोध निर्देशिका डॉ0 अंजलि पाण्डेय
विभागाध्यक्ष चित्रकला विभाग महारानी लक्ष्मी बाई कन्या स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल (म0प्र0)

(Received-28 November 2024/ Revised-10 December-2024/ Accepted-20 December-2024/Published-27 December-2024)

सारॉंश

आधुनिक कला में नये–नये वादों ने विश्व कला को प्रभावित किया जिसमें पिकासो के घनवाद ने कला में क्रान्तिकारी परिवर्तन के साथ चित्रों में त्रिआयामी प्रभाव को चित्रित करने का सृजनात्मक प्रयास किया पिकासो का घनवाद नीग्रो मूर्ति शिल्प से प्रेरित 'द लेडी ऑफ अविगनन्' घनवाद की प्रथम कलाकृति है वहीं भारत में गगनेन्द्र नाथ टैगोर ने नये–नये प्रयोग करके कला को नये आयाम दिये जिस तरह से आधुनिक कला में पिकासो के घनवाद के प्रभाव से पेरिस से लेकर यूरोप के अन्य देशों के कलाकार भी प्रभावित होने से न बचे इसी प्रकार गगनेन्द्रनाथ टैगोर के घनवाद ने आधुनिक भारतीय चित्रकला को एक नया स्वरूप प्रदान किया उनका घनवाद पाश्चात्य पिकासो से भिन्न है।

कुन्जी शब्द : – घनवाद, नीग्रो, आइब्रेरियन, संश्लेषणात्मक, कोलॉज, पाश्चात्य अतेन्द्रिय रोमंटिकता, त्रिआयमी, परिप्रेक्ष्य

परिचय

मार्डन आर्ट में एक के बाद एक 'इज्म' आये हर 'इज्म' अपने में अनूठा था। उसकी अपनी एक अलग पहचान थी। इन्हीं 'इज्मों' में से एक 'इज्म' जो बीसवी सदी की देन रहा वह था पिकासों का घनवाद जो की एक नयी सोच एवं प्रकृति में जो

भी चीजें या वस्तुएं विद्यमान है उन्हें एक नये नजरिये से देखा और अपनी पेंटिंग के माध्यम से पूरी दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया जिसे सिज़ा के ''Cone'' से प्रभावित होकर पिकासो ने cube शब्द इजात करके अपनी मौलिकता का परिचय दिया[1] प्रकृति की प्रत्येक वस्तु को चाहे वह गिटार हो या वायलिन या फिर शराब ब्राण्डी की बोतले तथा पीने के पात्र, पाइप, सिगरेट, ताश के पत्ते अक्षरों का प्रयोग भी ज्यामितीय आकारों से अछूते न रहे 1912 और 1914 के मध्य ''टेक्सचर'' सर्वाधिक क्यूबिस्ट शैली में बलवती होता नजर आता है। घनवाद में टैक्सचर्स के कृत्रिम प्रभाव केवल रंगों के द्वारा ही नहीं बल्कि असली चीजों अखबार की कतरनों कपड़ों के टुकड़ों, दफ्ती और कार्ड के टुकडों आदि को चिपकाकर शामिल किया जिसने ''सिन्थेटिक क्यूबिज्मशैली को इजात किया और चित्र संरचना को चित्रकला का मूलआधार मानते हुए ज्यामितीय कला–कृतियों का सृजन किया। भारतय कलाकारों में गगनेन्द्र नाथ टैगोर ने घनवादी शैली को निजी और मौलिक ढंग से उकेरा जिसका प्रभाव भारत की कला पर पड़ा।

पिकासो का घनवादः–

घनवादी शैली में पिकासो ने नये–नये चित्र सृजित किये जो कि दृनिया भर में प्रसिद्ध व चर्चित रहे। पाब्लो पिकासो द्वारा सृजित चित्र ''हेड ऑ ए लेडी इन ए मेन्टिला'' सीधी रेखाओं से बना अत्यन्त सुन्दर चित्र है। इस चित्र में पिकासो ने नाक, कान, मुँह सभी अंग प्रत्येग ज्यामितीय आकारों में सृजित किये। इस चित्र को देखने से लगता है मानों किसी शिल्पी ने मानव आकृति को लकड़ी में बनाया हो। अफ्रीकी आदिम कला प्रेरणा स्रोत रही घनवाद और फावावाद की जो की पिकासो के घनवादी चित्र इसका जीता जागता उदाहरण हैं।

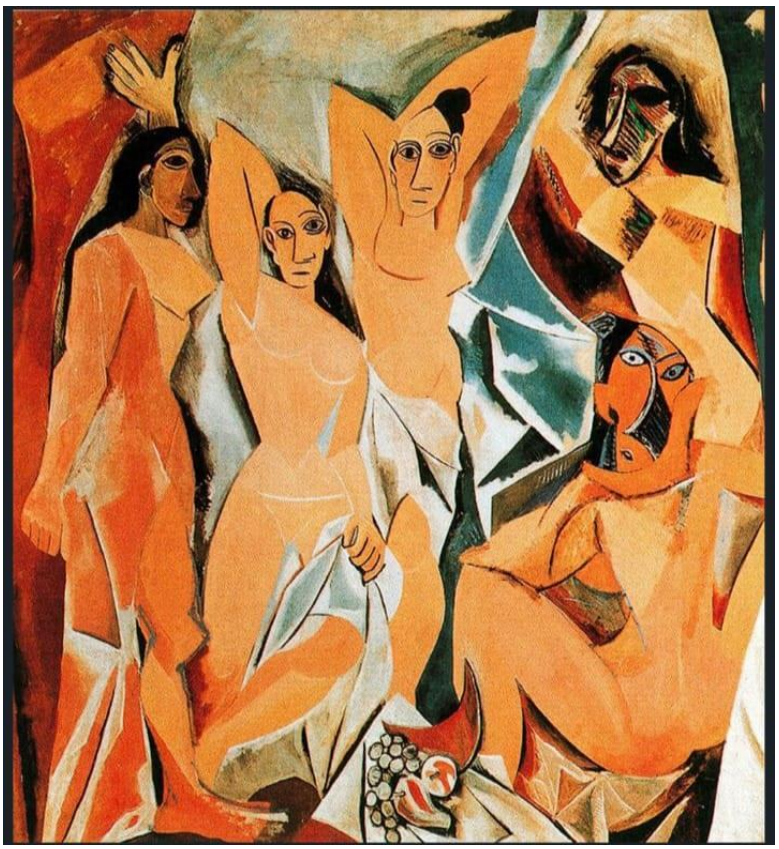

1906–07 में पिकासो द्वारा सृजित चित्र 'द लेडी ऑफ अविगनन्' घनवाद के शुरूआती दौर की प्रसिद्ध कलाकृति के रूप में दृष्टव्य है। यह चित्र नीग्रो मूर्ति शिल्प से उत्प्रेरित होकर पिकासो द्वारा बनाया एक प्रसिद्ध चित्र है। जोकि पिकासो ने 'तैल माध्यम' में बनाया है जो म्यूजियम ऑफ मर्डन आर्ट न्यूयार्क का हिस्सा है जिसमें पाँच नग्न महिलाओं को दर्शाया गया है जो वेश्याएं हैं। पेन्टिंग में दाई और खड़ी महिला के पास बैठी महिला के चेहरे आइबेरियन मुखौटे से प्रभावित प्रतीत होता है। यह पेन्टिंग ग्रे, वाइट, ब्राऊन, यलो ऑकर आदि रंगों से ओत–प्रेत निर्मित है

घनवादी चित्रों का अधिक सम्बन्ध आँखे जो देखे वह नहीं बल्कि दिमाग जो समझता हो उसे अपना लक्ष्य बनाया। प्रारम्भिक चरण के घनवादी चित्रों में बिखरे नज़र आते हैं। विभिन्न तलों को भूरी या फिर हरित आभूषणों में बनाया गया। 1910 से न केवल पेरिस नगर के चित्रकार ही घनवाद से प्रभावित हुये बल्कि योरोप के अन्य देशों के कलाकार भी अछूते न रहे। इटली, जर्मनी, रूस और इंग्लेड भी इससे प्रभावित हुए बिना न रहे। घनवाद के दो पक्ष देखने को मिलते हैं। पहला पक्ष

विश्लेषणात्मक (अनालिटिकल) तथा दूसरा संश्लेषणात्मक (सिन्थेटिक)। घनवाद के दूसरे पक्ष में एक ही वस्तु को एक ही साथ अलग–अलग दिशाओं से भिन्न–भिन्न कोणों से (आमने से, सामने से, अगल से, बगल से, ऊपर से, नीचे से, आगे से, पीछे से) एक साथ दिखता हुआ चित्रित करना घनवादी चित्रकारों का धेय था।

संश्लेषणात्मक घनवाद में एक ही वस्तु को विभिन्न दिशाओं से एक साथ देख चित्रित किया जाता था। उदाहरण के लिए यदि चित्रकार को एक चाय के प्याले को चित्रित करना होता तो वह उस चाय के प्याले को भिन्न–भिन्न दिशाओं तथा अगल–बगल को ऐसा चित्रित किया जाता कि उसके मूल स्वरूप का पता लगाना कठिन कार्य था। ऐसे चित्रों को देखकर दर्शक का बौखला जाना, चकरा जाना स्वाभाविक है।

पोर्ट्रेट ऑफ एम0 कन्हवीले घनवाद के देसरे पक्ष को दर्शाता है। यह कलाकृति अनेक ठूकड़ों में बनायी।[2] इस चित्र में केवल एक आँख, एक कान, नाक और मूँह कुछ–कुछ आंशिक रूप में पहचान में आता है यह कृति ढहे हुए मकान सी प्रतीत होती है, इस प्रकार के चित्रों को 'पजिल पिक्चर्स' (चक्कर में डालने वाले चित्र) कहा गया।

घनवादी चित्रों में नीग्रों शिल्प जैसा सादगीकरण, सीधी रेखाएं, वक्र रेखाओं का परित्याग, चित्र संरचना एवं संगठन पर सम्पूर्ण दृष्टि आकृतियों का ज्यामितीय आकारों में समावेश एवं ठोसता उभार (3–डी) पर जोर चित्रों में एक साथ आमने–सामने और अगल–बगल के रूपों का सृजन घनवादियों की मान्यता थी की सभी प्राकृतिक वस्ताओं का अन्तर्निहित स्वरूप ज्यामितीय है इसी के आधार पर अंग–प्रत्यंग का विश्लेषण विभिन्न खण्डों में विभक्त करके घनों, त्रिकोणों, वर्गों आदि ज्यामितीय आकारों में वस्तु व्यक्ति या दृश्य को संजोया और साथ ही साथ घनवादी चित्रों में भूरी, हरित या श्यामल आभाओं का समावेश कर अपने लक्ष्य को साकार किया। संश्लेषणात्मक घनवाद में अखबारी कतरनों, ताश के पत्रों, लेबिलो, सुतली तार आदि

के टुकड़ों को संजोकर कोलाज का नाम दिया। घनवाद में चटक रंगों का प्रयोग देखने को मिलता है, जिसे उत्कृष्ट टेक्सचर लाने के लिए रंगों के साथ बालू के मिश्रण का प्रयोग किया गया। घनवाद में जैसा दिमाग चीजों को देखकर समझता हो इस समझ पर अधिक बल दिया गया।

पिकासो की घनवादी शैली के तीन मुख्य स्वरूप देखने को मिलते हैं जिसमें प्रारम्भिक (नीग्रोआइड) जिसका समय 1906–9 तक रहा, दूसरा स्वरूप विश्लेषणात्मक घनवाद (Analytical Cubism) जिसका समय 1909–12 रहा। तीसरा संश्लेषणात्मक घनवाद (Synthetic Cubism) 1912 जिसका समय रहा।

सर्वप्रथम घनवादी शैली के चित्रों के स्वरूप का मूल आधार नीग्रो मूर्ति शिल्प और आइबेरियन चेहरे थे जो पिकासो के चित्रों में उसकी छाप देखी जा सकती है, और घनवादी शैली की नींव भी मूलतः इन्हीं पर आधारित थी। इसके पश्चात घनवादी शैली का विश्लेषणात्मक स्वरूप विकसित हुआ जिसके अन्तर्गत प्राकृतिक वस्तुओं और प्रकृति के जीव–जन्तुओं को ज्यामितीय आकारों में ढाला गया इसके पश्चात संश्लेषणात्मक घनवादी शैली ने जन्म लिया और चित्र फलकों पर विभिन्न असली वस्तुओं के टुकड़े चिपकाये गये और इसमें रंगों का प्रयोग बालू के साथ इस उद्देश्य से लिया गया ताकि सतह का स्वरूप आकर्षक दिखाई पड़े।

प्रारम्भिक (नीग्रोआइड) इस प्रारम्भिक चरण जिसे ''जर्मिनेटिंग'' काल भी कहा गया इस चरण के अन्तर्गत पिकासो ने चित्रों के अतिरिक्त मूर्तियों में भी रूची दिखाई पिकासों द्वारा सृजित 'हेड' तथा चित्र 'बेदर' 'द रिजर्व पर ऑफ होर्टा', 'सीटेड वूमन' आदि चित्रों की संरचना की।

विश्लेषणात्मक घनवादी शैली में चित्रों के सृजन का सिलसिला सिजाँ के चित्रों से उत्प्रेरित होकर ज्यामितीय तलों का विश्लेषण करके चित्रांकन का शुभआरम्भ हुआ। तथा इस अवधि के चित्रों में बहुत ही सीमित रंगों की आभाओं का प्रयोग किया गया और ज्यामितीय तलों का आकार प्रकार बहुत ही छोटा और कठिन तथा उलझावपूर्ण

होने लगा। विश्लेषणात्मक अवधि में पिकासो ने पोर्ट्रेट और स्टिल लाईफ बनाये जिसमें 'पोट्रेट ऑफ अम्ब्राएसे वोलार' दूसरा 'पॉर्ट्रेट ऑफ कनवीले' तीसरा चित्र 'स्टिल लाइफ विद ए वायलिन' आदि चित्रों की संरचना की।

संश्लेषणात्मक घनवादी शैली के 1910–1912 के मध्य चित्रों में घनों के आकार अधिक छोटे होने के कारण चित्र बिलकुल पहचान से परे हो गये, जिसे देखकर पिकासो ने अपनी शैली में नया परिवर्तन किया वह था संश्लेषणात्मक घनवाद जो कि कोलाज या ''पेपीकोली'' के रूप में उभरा साथ ही साथ इस अवधि में अफ्रीकन चेहरे का अधिक व गहरा प्रभाव दिखाई पढ़ता है। जिसे पिकासो ''आइवरी कोस्ट'' से लाया था इस लकड़ी के चेहरे के सिर में चिड़ियाँ के पंख घुसे थे जो कि पिकासो के संश्लेषणात्मक घनवादी शैली को विकसित होने का कारण बना और इस अवधि के बने चित्र अधिक सपाट और सजावटी नज़र आते हैं, निश्चित रंगों का प्रयोग तथा 'स्टिल लाईफ' चित्रों में फल की तश्तरी खाने की मेज, अखबार मंडोलियन बाजा आदि दिखाई पड़े। संश्लेषणात्मक घनवादी शैली में समय और स्थान को ध्यान में रखकर चित्रों को संजोया जाता था। रंगों और टेक्सचरों के प्रयोग के साथ, क्यूबिज्म की दोनों शैलियों के चित्रों में कलाकार ने गति को दर्शाने तथा चलचित्र के अविष्कार के पहले योरोपीय चित्रकारों चित्र का चित्र जगत में यह बढ़ता कदम था। पिकासो द्वारा चित्रित 'जीने से उतरती हुई नग्न स्त्री' (Nude Descending the stair case) चित्र जिसे पिकासो ने 1912 में बनाया[3] यह चित्र सिन्थेटिक क्यूबिज्म का जीता जागता उदाहरण है। संश्लेषणात्मक संयोजन चित्रों में ही नहीं बल्कि आधुनिक शिल्प में भी देखे जाते हैं। पिकासो ने इस शैली से कई वाद्य यंत्रों या वादकों से सम्बन्धित चित्र अनुरंजित किये। जैसे–जैसे बाटल एण्ड गिटार आदि इस समय के पिकासो द्वारा अनुदेशित चित्र हैं। प्रथम विशव युद्ध के पश्चात् घनवादी शैली ने अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया और इससे प्रेरित ''इज्म'' (वाद) इटली का भविष्वाद है।

गगनेन्द्र नाथ टैगोर का घनवाद– एक अत्यन्त प्रतिभाशाली कलाकार गगनेन्द्र नाथ टैगोर जो की प्रयोगधर्मी कलाकार थे जिन्होंने अपने नये–नये प्रयोगों से भारतीय कला को नयी रोशनी देकर पूरी दुनिया में एक नयी पहचान दी इन नये प्रयोगों में एक प्रयोग है ''घनवाद'' भारतीय कला में घनवाद लाने का श्रेय इसी महान कलाकार गगनेन्द्र को जाता है तथा जो की अवनीन्द्र नाथ टैगोर के बड़े भाई के रूप में भी जाने जाते हैं। यहाँ छोटे भाई अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय कला को महत्ता देकर अपने शिष्यों को अलग–अलग स्थानों पर भेजकर भारतीय कला का प्रचार–प्रसार किया वहीं बड़े भाई गगनेन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय कला में अपने नित–नये प्रयोग से भारतीय कला को एक नयी पहचान दिलायी।[4]

1867 में जन्में इस प्रतिभाशाली कलाकार गगनेन्द्र के पिता गुनेन्द्र तथा चाचा रवीन्द्रनाथ टैगोर थे चाचा रविन्द्रनाथ टैगोर जो कि एक कवि होने के साथ–साथ एक चित्रकार के रूप मे भी जाने जाते हैं जिन्होंने अपनी 68 साल की उम्र में चित्रकारी की शुरूआत करके भारतीय चित्रकला को नयी दिशा प्रदान की और यह एक ऐसे कवि व चित्रकार हैं जिनके नाम से कोई भी अपरिचित नहीं हो सकता चौदह वर्ष की उम्र में पिता के देहान्त से इस बालक के समदा नदी चुनौतियों में जन्म् लिया। वह स्कूली शिक्षा लेने में असमर्थ रहे हरिनारायण बोस से रेखांकन की शिक्षा ली तथा जापानी चित्रकारों से जापानी चित्रकारी का प्रशिक्षण लिया बचपन से उनके अन्दर कला को परखने की सूझ व संग्रह करने की प्रतिभा थी। जो की उनके द्वारा भारतीय तथा यूरोपीय दोनों ही शैलियों के चित्र खरीदकर इकट्ठे किये इन चित्रों से समझ में आता है उन्होंने इस बात पर ध्यान न देकर की कला के लिए है बल्कि इस बात पर अधिक बल दिया कि कला को किसी भी परिधि में बाँधने की आवश्यकता नहीं इस बात को समझते हुए एक सच्चे कला प्रेमी के समान स्वतंत्रता को प्राथमिकता देते हुए अपनी सोच व कल्पना शक्ति को प्राथमिकता दी और आगे बढ़ाया। जिस तरह से मार्डन आर्ट में पिकासो के घनवाद के प्रभाव से पेरिस से लेकर यूरोप के

अन्य देशों के कलाकार भी प्रभावित होने से वांछित न रहे उसी तरह से गगनेन्द्रनाथ टैगोर के घनवाद ने आधुनिक भारतीय चित्रकला को एक नया स्वरूप दिया जो आज समकालीन कला के रूप में हमारे समक्ष है गगनेन्द्रनाथ द्वारा बनाय चित्र ''टैम्पल'' में गगनेन्द्रनाथ के घनवाद का स्वरूप झलकता है। इस चित्र में नारंगी, पीले, नीले, काले आदि तैल रंगों से कैनवस पर बनाया चित्र है।[5]

गगनेन्द्रनाथ का घनवाद पाश्चात्य पिकासो के घनवाद से भिन्न है जहाँ पिकासो के घनवादी चित्रों में कल्पना, स्वप्निल प्रभाव, अद्‌भुतता, विलक्षणता आदि नज़र आता है वहीं गगनेन्द्र का घनवाद केवल रंग और तूलिका का ही मोहताज न होकर बहुमुखी कलाकार के रूप में उभरे जिसमें फर्नीचर डिजाइन भी शामिल दिखाई पढ़ता है, फर्नीचर डिजाइन में उनके घर के दीवान, दीवार लैप आदि है। सरकारी सहायता द्वारा स्थापित हुई ''बंगाल होम इन्डस्ट्रीस ऐशोसिएशन'' गगनेन्द्र के प्रयासों की देन है। इस प्रयोग धर्मी चित्रकार के चित्रों में लीथोग्रफी चित्र भी अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ''बान्दिनी राजकुमारी'' चित्र ज्यामितीय स्वरूप त्रिभुज के छोटे–बड़े व एक दूसरे को आच्छादित करते हुए छाया प्रकाश से परिपूर्ण है जिसमें कि चित्र के अंधेरे भाग पर भी स्पष्ट रूप से प्रकाश अपनी शोभा बढ़ा रहा है, तथा भारत में मौलिक विधि से विशुद्ध दृश्य चित्रण के आरम्भ होने का पूरा–पूरा श्रेय अवनीन्द्रनाथ तथा गगनेन्द्रनाथ को है।

गगनेन्द्र की कलाकृतियों में घनवादी शैली में प्रयोग की शुरूआत (92) के दशक से दिखाई पड़ती है सर्वप्रथम गगनेन्द्र को 1922 में डॉ0 स्टैला क्रमरिश ने एक भारतीय घनवादी चित्रकार के नाम से नबाज तथा भारतीय आधुनिक चित्रकला की एक प्रदर्शनी 1923 में बर्लिन में आयोजित हुई, जिसमें गगनेन्द्र की कलाकृतियों को घनवादी कहकर सम्बोधित किया गया तथा उनकी कृतियों की तुलना यूरोपीय घनवादी चित्रकारों से की और उन्हें भारत का साहसी तथा आधुनिक चित्रकार के रूप में मान्यता दी गयी। गगनेन्द्र की कला में त्रिआयामी घनवादी ठोस रूपों के संयोजन अर्थात प्रभाव नहीं दिखायी पड़ते, कोमल संवेदनाओं तथा छाया–प्रकाश के रहस्यात्मक प्रयोग से युक्त होने के कारण ये चित्र रोमांटिकता की पोशाक पहने प्रतीत होते हैं। उनके घनवाद में अतेन्द्रिय रहस्यात्मकता समन्वयात्मक दृष्टि और आदर्शवादिता पश्चिमी घनवाद में भिन्नता पैदा करते हैं। गगनेन्द्रनाथ द्वारा सृजित हिमालय में वर्षा के दृश्य में समान्तर चतुर्थ जो की सृष्टि की गगनेन्द्र ने पेटिंग में घनवाद तथा प्रभावाद के समन्वय के साथ प्रकाश को प्रधान रूप से चित्रण का माध्यम बनाया, फिर चाहे वह सूर्योदय एवं सूर्यास्त के जलते हुए लाल रंग के चित्र हो या फिर अंधेरे में टिमटिमाती सड़क की रोशनी। इस महान कलाकार ने सर्वप्रथम भारतीय विषयों के लिये घनवादी शैली का प्रयोग कर अपनी मौलिकता का परिचय देते हुए विदेशी शैलियों के समन्वय से अपनी कला को देश में ही नहीं बल्कि देश–विदेश के कलाकारों के समक्ष एक नितान्त मौलिक स्वरूप विकसित किया इस महत्वपूर्ण कलाकार का मार्ग अलोचना व प्रशंसा दोनों से ओत–प्रोत रहा।

यूरोप में जिस तरह घनवाद का प्रयोग किया गया वह एक चुनौती था परन्तु भारत में कलाकारों ने घनवाद को कभी चुनौती के रूप में ग्रहण नहीं किया चूंकि यह पहले से ही परिपक्व रूप में भारत आया था जिसमें से कुछ एक घनवाद की विशेषताओं को लेकर यहाँ के कलाकारों ने घनवाद में प्रयोग किये। सबसे पहले कलाकारों में गगनेन्द्रनाथ टैगोर थे जिन्होंने चित्रों में स्याही के माध्यम से रेखाचित्रों

में घनवादी प्रयोग किये। इन चित्रों में काले सफेद भाग छाया प्रकाश के साथ ही वस्तुओं के तलों आयामों को दिखाने का प्रयास किया। वे सीधे ढाँचों के बाय कर्णवत ढाँचों का प्रयोग करके अन्तराल के रहस्य को और अधिक बढ़ा देते थे। यहाँ यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि गगनेन्द्रनाथ टैगोर का घनवाद पूर्णतः मौलिक और पिकासों के घनवाद से भिन्न है गगनेन्द्रनाथ टेगौर ने भारतीय परिप्रेक्ष्य में घनवादी प्रयोग किये हैं यही प्रेरणा आगे बलवती होती गयी और भारत के अनेकों कलाकारों ने घनवाद से प्रेरणा लेकर भारतीय स्वरूप में घनवादी चित्रों का सृजन किया। प्रेरित कलाकारों में हुसैन, सूजा, तैयब मेहता, शान्ति दवे, के॰एस॰ कुलकर्णी तथा ज्योति भट्ट, अकबर पद्मी आदि ने अपनी कृतियों में घनवादी प्रयोग किये।

निष्कर्ष

पिकासो ने घनवादी शैली को सृजित कर चित्र में तीसरे आयाम को उकेरा। पिकासो और ब्रॉक दोनो की निजी सूझबूझ से घनवाद का उदय हुआ। कुछ विद्वान पिकासो को और कुछ ब्रॉक को घनवाद का जन्मदाता मानते हैं। लेकिन पिकासो ने घनवादी शैली को प्रमुखता से कैनवास पर चित्रित किया। यह शुरूआत उसने नीग्रो आदिम मूर्ति शिल्प से प्रेरित होकर की थी जिसका प्रभाव पूरे विश्व की कला पर पड़ा। भारत में गगनेनद्र नाथ टैगोर ने चित्रकला के तीसरे आयाम को ज्यामितीय रूपकारों में संजोकर मौलिक और सृजनात्मक तौर तरीके से चित्रांकन किया है जिसका प्रभाव भारतीय कलाकारों पर पड़ा।

सन्दर्भ

1. मार्डन आर्ट, राजेन्द्र बाजपेई, पृष्ठ– 114
2. वही पृष्ठ– 120
3. वही, पृष्ठ– 126
4. आधुनिक भारतीय चित्रकला, डा0 जी0के0 अग्रवाल, पृष्ठ–28
5. भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य, प्राणनाथ मागो, पृष्ठ–30